पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम्

(NEP)

2026-27

MA SANSKRIT-VYAKARANAM NEP 2026-27

Semester - I

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credit
1	Discipline Specific Major	MVSAMJ-101	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य प्रथमद्वितीयतृतीयाह्निकानि)	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major	MVSAMJ -102	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य चतुर्थपञ्चमषष्ठाह्निकानि)	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major	MVSAMJ -103	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य सप्तमाष्टमनवमाह्निकानि)	3	1	0	4
4	Discipline Specific Major	MVSAMJ -104	पञ्चाह्निकस्मरणम्	0	0	8	4
5	Discipline Specific Minor	MVSAMN -105	वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) पद्यकाव्यञ्च	3	1	0	4
6	Multi-Disciplinary	MVSAMD-106	योगदर्शनं सव्यासभाष्यम् (चयनितप्रसङ्गाः)	3	1	0	4
7	Yoga Practical (Non Credit)	MVSAVA-107	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् –VII	0	0	12	0
						TOTAL	24

Semester – II

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credit
1	Discipline Specific Major	MVSAMJ-201	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयतृतीयचतुर्थपादाः)	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major	MVSAMJ-202	महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major	MVSAMJ-203	महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)	3	1	0	4
4	Discipline Specific Major	MVSAMJ-204	पञ्चोपदेशस्मरणम्	0	0	8	4
5	Discipline Specific Minor	MVSAMN-205	वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्) गद्यकाव्यञ्च	3	1	0	4
6	Multi-Disciplinary	MVSAMD-206	सब्रह्ममुनिभाष्यम् , वेदान्तदर्शनम् (चयनितप्रसङ्गाः)	2	0	0	2
7	Research Related Courses/Activities	MDPHRE-207	Research and Publication Ethics	1	0	2	2
8	Yoga Practical (Non Credit)	MVSAVA-208	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् – VIII	0	0	12	0
						TOTAL	24

Semester - III

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credit
1	Discipline Specific Major	MVSAMJ-301	महाभाष्यम् (तृतीयाध्यायः)	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major	MVSAMJ-302	महाभाष्यम् (चतुर्थाध्यायः)	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major	MVSAMJ-303	महाभाष्यम् (पञ्चमाध्यायः)	3	1	0	4
4	Discipline Specific Major	MVSAMJ-304	धातुवृत्तिः (भ्वादिगणः)	3	1	0	4
5	Discipline Specific Minor	MVSAMN-305	परिभाषेन्दुशेखरः चम्पूकाव्यञ्च	3	1	0	4
6	Multi-Disciplinary	MVSAMD-306 (1)	सस्वरवेदपाठः	0	0	4	2
		MVSAMD-306 (2)	भारतीयसंगीतबोधः	1	0	2	
		MVSAMD-306 (3)	भारतीयनृत्यबोधः (भरतनाट्यम्)	1	0	2	
		MVSAMD-306 (4)	भारतीयनृत्यबोधः (कथकः)	1	0	2	
7	Research Related Courses/Activities	MDPHRE-307	Research Methodology	2	0	0	2
8	Yoga Practical (Non Credit)	MVSAVA-308	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् - IX	0	0	12	0
						TOTAL	**24**

Semester - IV

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	L	L	Total Credit
1	Discipline Specific Major	MVSAMJ -401	महाभाष्यम् (षष्ठाध्यायः)	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major	MVSAMJ -402	महाभाष्यम् (सप्तमाध्यायः)	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major	MVSAMJ -403	महाभाष्यम् (अष्टमाध्यायः)	3	1	0	4
4	Discipline Specific Major	MVSAMJ -404	धातुवृत्तिः (अदादितः कण्ड्वादिगणपर्यन्तम्)	3	1	0	4
5	Research Related Courses/Activities	MVSARE-405	पाण्डुलिपिविज्ञानम्	2	1	2	4
6	Research Related Courses/Activities	MVSARE-406	Project/Dissertation	0	1	6	4
7	Yoga Practical (Non Credit)	MVSAVA-407	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् - X	0	0	12	0
						TOTAL	**24**
						GRAND TOTAL (Credits)	**96**

विषय विशेषज्ञ	विषय विशेषज्ञा	संकायाध्यक्षा	विभागाध्यक्ष
प्रो. ब्रजभूषण ओझा जी विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	प्रो. शिवानी वी. डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत	प्रो. साध्वी देवप्रिया डीन-मानविकी एवं प्राच्यविद्यासंकाय, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार	प्रो. मनोहर लाल आर्य विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

प्रथमपत्रम्- महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य प्रथमद्वितीयतृतीयाह्निकानि)

MVSAMJ-101 Credit-4

उद्देश्य-

- शब्दानुशासन का प्रस्ताव, शब्द का स्वरूप, शब्दानुशासन के प्रयोजन, शब्दानुशासन निर्माणरीति, पाणिनी आचार्य के शास्त्र की प्रवृत्ति, शब्द के ज्ञानमें धर्म आहोस्विद् प्रयोग में, व्याकरण शब्द का अर्थ विषयों से अवगत कराना ।
- वर्णमाला में निर्दिष्ट वर्णों एवं प्रत्याहार सूत्रों पर पक्ष प्रतिपक्ष पूर्वक विचार करा कर विचारशील एवं पुरुषार्थी व्यक्तित्वों का निर्माण करना ।

परिणाम-

- महाभाष्य का अध्ययन कर छात्र अपनी बुद्धि को सूक्ष्म करता हुआ किसी भी क्षेत्र में एक कुशल नेतृत्व का निर्वहन करने में समर्थ हो जाता है ।
- इससे शब्द के ज्ञान में धर्म है अथवा प्रयोग में धर्म इस विषय को समझकर शब्दों का धर्म के अनुरूप प्रयोग करता है एवं संस्कृति के उत्थान में एक उत्कृष्ट भूमिका निभाता है।
- व्याकरण शब्दों की संरचना व उसका यथार्थ बोध कराने वाला ग्रंथ है, इसके अध्ययन से सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय को समझने की योग्यता प्राप्त हो जाती है।
- इससे विद्यार्थी वर्णमाला में निर्दिष्ट वर्णों व प्रत्याहारों के निर्माण में निपुण होकर व्याकरण व अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में एक श्रेष्ठ आचार्य की भूमिका का निर्वहन करता हुआ श्रेष्ठ आचार्यों का निर्माण करता है।

महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य प्रथमद्वितीयतृतीयाह्निकानि)

इकाई-1

शब्दानुशासनस्य प्रस्तावः, शब्दस्य स्वरूपम्, शब्दानुशासनस्य प्रयोजनानि

इकाई-2

शब्दानुशासननिर्माणरीतिः, पाणिन्याचार्यस्य शास्त्रस्य प्रवृत्तिः, शब्दस्य ज्ञाने धर्म आहोस्चित् प्रयोगे, व्याकरण शब्दस्य अर्थः

इकाई-3

अइउण्- झभञ् (सूत्राणां व्याख्या)

इकाई-4 (आह्निक-३)

वृद्धिरादैच् (1.1.1)-इको गुणवृद्धी (1.1.3)

सहायकग्रन्थाः-

1. **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
   प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
2. **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
   प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
   प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
4. **व्याकरणमहाभाष्यम्- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री**
   प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसी दास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य चतुर्थपञ्चमषष्ठाह्निकानि)

MVSAMJ-102 Credit-4

उद्देश्य-

- महर्षि पाणिनि विरचित अष्टाध्यायी के न धातुलोप आर्धधातुके से न वेति विभाषा सूत्रों पर महर्षि पतञ्जलि कृत महाभाष्य का ज्ञान कराकर लौकिक उदाहरणों के साथ विद्यार्थी की बुद्धि को सूक्ष्म कर व्याकरण के गूढ़ सिद्धान्तों से अवगत कराना।

परिणाम-

- विद्यार्थी संयोग आदि संज्ञाओं के अध्ययन से संज्ञा संज्ञी निरूपण को समझकर विस्तार से बोधन कराने में समर्थ हो जाते हैं एवं भारत की प्राचीन शास्त्रीय नामकरण की पद्धति से भी परिचित होकर उनका अनुपालन करता है।
- न धातुलोप आर्धधातुके का निरूपण व विधि सूत्र में स्थित पदों के साथ विशेषण विशेष्य के प्रकार को समझकर परिभाषा सूत्रों का विधिसूत्रों में प्रयोग करने में निपुण हो जाता है।
- प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र के अध्ययन से विधि वाक्यों में प्रकृति भाव का ज्ञान होने से तद्विषयक वाक्यों का निर्माण कर लेता है।
- महाभाष्य का अध्ययन कर विद्यार्थी अनेक विषयों को समझने व उनको व्यापक रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ हो जाता है।

महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य चतुर्थपञ्चमषष्ठाह्निकानि)

इकाई-1 (आह्निक-४)

न धातुलोप आर्धधातुके (1.1.4)- नाञ्झलौ (1.1.10)

इकाई-2 (आह्निक-५)

ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)-ईदूतौ च सप्तम्यर्थे (1.1.19)

इकाई-3 (आह्निक-५)

दाधा घ्वदाप् (1.1.20)-क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)

इकाई-4 (आह्निक-६)

सर्वादीनि सर्वनामानि (1.1.27)- कृन्मेजन्तः (1.1.39)

इकाई-5 (आह्निक-६)

अव्ययीभावश्च (1.1.41)- न वेति विभाषा (1.1.44)

सहायकग्रन्थाः-

1. **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
   प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
2. **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
   प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
   प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
4. **व्याकरणमहाभाष्यम्- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री**
   प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसी दास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

तृतीयपत्रम्- महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य सप्तमाष्टमनवमाह्निकानि)

MVSAMJ-103 Credit-4

उद्देश्य-

- अष्टाध्यायी सूत्रों के इग् यणः सम्प्रसारणम् सूत्र से एङ् प्राचां देशे पर्यन्त सूत्रों पर महर्षि पतञ्जलिकृत महाभाष्य का अध्ययन कराकर तत्वान्वेषण की वाद पद्धति से अवगत कराना, जिससे वह भविष्य में सरलता से सत्यतथ्यों का अन्वेषण कर सके।

परिणाम-

- महाभाष्य कें लौकिक न्याय सिद्ध परिभाषाओं के माध्यम से अपनी प्रज्ञा को अतिसूक्ष्म करता है और लोक व समाज में एक श्रेष्ठ नेतृत्व कर्तृत्व वा वक्तृत्व की भूमिका निभाता हुआ सबको सत्यपथ, सनातनपथ पर आगे बढ़ाता है।
- विद्यार्थी 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इसका अध्ययन करके विधि वाक्यों में एकवाक्यता के माध्यम से सूत्रार्थ करके प्रयोगों की सिद्धि करने में समर्थ हो जाता है।
- विद्यार्थी 'स्वंरूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा' इत्यादि ग्राहक सूत्र के अध्ययन से गृहीत शब्द तथा वर्ण को आसानी से समझाने में समर्थ हो जाते हैं।

महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य सप्तमाष्टमनवमाह्निकानि)

इकाई-1 (आह्निक-७)

इग् यणः सम्प्रसारणम् (1.1.45) - षष्ठी स्थानेयोगा (1.1.49)

इकाई-2 (आह्निक-७)

स्थानेऽन्तरतमः (1.1.50) - अनेकाल्शित् सर्वस्य (1.1.55)

इकाई-3 (आह्निक-8)

स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ (1.1.56)-द्विर्वचनेऽचि (1.1.59)

इकाई-4 (आह्निक-9)

अदर्शनं लोपः (1.1.60)- तस्मिन्निति निर्दिष्टे..... (1.1.66)

इकाई-5 (आह्निक-9)

स्वं रूपं शब्दस्य.... (1.1.68) - एङ् प्राचां देशे (1.1.75)

सहायकग्रन्थाः-

1. **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
   प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
2. **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
   प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
   प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
4. **व्याकरणमहाभाष्यम्- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री**
   प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसी दास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

चतुर्थपत्रम्- पञ्चाह्निकस्मरणम् (नवाह्निकस्य प्राराभिकपञ्च)

MVSAMJ -104 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य -

- पस्पाशाह्निके में उपदिष्ट शब्दानुशासन के प्रयोजन, शब्दस्वरूप जातिपदार्थ वा द्रव्य, शब्दनित्य कार्य वा, धर्मनियम, ज्ञाने धर्म प्रयोगे वा, इत्यादि विविध दार्शनिक विषयों से अवगत कराना ।
- प्रत्याहाराह्निक में वर्णोपदेश प्रयोजन, वर्णाकृति-निरुपण, अयोगवाह, वर्णार्थवन्तानर्थका वा इत्यादि अनेक विषयों का बोध कराना।
- तृतीयचतुर्थीह्निक में संज्ञा, परिभाषा, निषेधादि सूत्रों के गूढ विषयों का बोथ करना।

परिणाम

- ब्रह्मस्वरूप शब्द के विषय में निर्भ्रान्त बोध हो जाता है।
- साधुशब्द के प्रयोग में अर्थ बोध के साथ धर्म भी होता है। इससे अध्येता अवगत हो जाता है।
- शब्दों के नित्य कार्य वा, जातिपदार्थ व्यक्ति वा इत्यादि अनेक विषयों से अवगत हो जाता है।
- शब्दानुशासन के अध्ययन से विविध सामाजिक व लौकिक विषयों से अवगत हो जाते हैं।

ईकाई -१ पस्पशाह्निकम्

ईकाई -२ प्रत्याहाराह्निकम्

ईकाई -३ वृद्धिरादैच् (१.१.१) - दीधीवेवीटाम् (१.१.६)

ईकाई -४ हलोनन्तराः संयोगः (१.१.७) - क्तक्तवतु० (१.१.२५)

सहायकग्रन्थाः-

1. **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
   प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
2. **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
   प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
   प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
4. **व्याकरणमहाभाष्यम्- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री**
   प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसी दास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) पद्यकाव्यञ्च

MVSAMN-105 Credit-4

उद्देश्य -

- कौण्डभट्ट विरचित वैयाकरणभूषणसार के माध्यम से व्याकरणशास्त्र मे निहित व्याकरण के दार्शनिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- काव्य के पारिभाषिक शब्दावली व उनके तात्पर्य का ज्ञान कराना।

परिणाम

- किसी भी तिङन्त पद के प्रत्येक अवयव के अर्थ निर्णय में पूर्ण समर्थ हो जाता है।
- काव्य को सुक्ष्मता से पढ़ व पढ़ा सकने में समर्थ हो जाता है।

इकाई 1 - वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) **क्रेडिट-1**

प्रथमकारिकातः एकादशकारिकापर्यन्तम्

इकाई 2 - वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) **क्रेडिट-1**

द्वादशकारिकातः प्रकरणसमाप्तिपर्यन्तम्

इकाई 3 - दशरूपकम् (प्रथमप्रकाशः पूर्वार्धः) **क्रेडिट-1**

इकाई 4 - दशरूपकम् (प्रथमप्रकाशः उत्तरार्धः) **क्रेडिट-1**

पाठ्य पुस्तकम-

1. वैयाकरणभूषणसारः - कंगला संस्कृत हिन्दीभाष्योपेतः
   प्रकाशकः- चौखम्बा कृष्णदास अकादमी वाराणसी
   वैयाकरणभूषणसारः (भैमीभाष्योपेतः)
   भीमसेन शास्त्री - राधा प्रेस नई दिल्ली
   वैयाकरणभूषणसारः - चौखम्बा संस्कृतप्रतिष्ठान
2. दशरूपकम् - डॉ. श्रीनिवास शास्त्री - प्रकाशक- साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार मेरठ।
   दशरूपकम् - डॉ भोला शंकर व्यास - चौखम्बा विद्याभवन

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

योगदर्शनं सव्यासभाष्यम् (चयनितप्रसङ्गाः)

MVSAMD-106 Credit-4

उद्देश्य -

- विद्यार्थियों को योगदर्शन के विषय में जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थियों को योगदर्शन के ज्ञान के द्वारा अमूर्त विषयों के लेखन, पठन में दक्ष बनाना।
- विद्यार्थियों को योगदर्शन की अवधारणाओं के माध्यम से व्यावसायिक दक्षता प्रदान करना।

परिणाम-

- छात्र को योगदर्शन के विषय का बोध हो जाता है।
- योगदर्शन के प्रतिपाद्य विषय हेय, हेयहेतु, हान, हानोपाय का पूर्णरूप से बोध हो जाता है।

इकाई १. योगदर्शनम् (समाधिपादः)

योग का स्वरूप, पञ्चवृत्तियाँ, द्रष्टा स्वरूप, अभ्यास-वैराग्य, सम्प्रज्ञात, असम्प्रज्ञात-ईश्वर प्रणिधान, ईश्वर का स्वरूप, चार प्रकार की भावनाएँ, समापत्ति, अध्यात्मप्रसाद, ऋतम्भरा प्रज्ञा, निर्बीज समाधि इत्यादि।

इकाई २. योगदर्शनम् (साधनपादः)

क्रियायोग, पञ्च क्लेश, अविद्या का स्वरूप, दृश्य व दृष्टा का स्वरूप, हेय-हेयहेतु, हान- हानोपाय, अष्टाङ्ग योग एवं उसका फल, प्राणायाम निरूपण, प्रत्याहार निरूपण इत्यादि।

इकाई ३. योगदर्शनम् (विभूतिपादः)

धारणा, ध्यान, समाधि व संयम का निरूपण, परिणामत्रय का वर्णन, विभूति वर्णन, उदान, समान प्राण पर संयम करने का प्रतिफल, भूतजय एवं इन्द्रियजय से उत्पन्न सिद्धियों का वर्णन, विवेक ज्ञान का स्वरूप एवं कैवल्य योग इत्यादि।

इकाई ४. योगदर्शनम् (कैवल्यपादः)

समाधि के प्रकार, चतुर्विध कर्म, हेतु फल आश्रय के आलम्बन के अभाव से दोषों का अभाव, धर्ममेघ समाधि का स्वरूप, क्लेश कर्म, निवृत्ति व उसका फल, गुणों की परिसमाप्ति, कैवल्य योग इत्यादि।

पाठ्य और सन्दर्भ ग्रन्थ :-

- योगदर्शनम्- स्वामी रामदेव, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।
- योगदर्शनम्- वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़।

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् –VII

MVSAVA-107

पूर्णाङ्कः–100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः–75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः–25
समयः–होरात्रयम्

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Unit-1: Basic Preparatory Asanas

Sukshma Yogic vyayam, Sthula Vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar

Unit-2: Asanas (15)

Swastikasan, Gaumukhasan, Veerasan, Kurmasan, Kukkutasan, Uttan Kurmasan, Dhanurasan, Ardha Matsyendrasan, Paschimottanasan, Mayurasan, Shavasan, Siddhasan, Padmasan, Simhasan, Bhadrasan

Unit-3: Advance Yogasanas (10)

Sheershasan, Vrishchikasan, Bhunamanasan, Hanumanasan, Sarvangasan, Paripurna Matsyasan, Halasan, Purna Dhanurasan, Purna Chakrasan, Purna Natarajasan, Mayurasan

Unit-4: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Jalneti, Sutra Neti (Rubberneti), Vamana Dhauti / Kunjar Kriya, Vatkram Kapalbhati

Unit-3: Pranayam, Bandha, Mudra & Meditation

Nadi Shodhan Pranayam, Suryabhedan Pranayam, Ujjayi, Bhastrika,Bhramari, Shitali, Seetkari pranayama

Mudra & Bandha: Mahamudra, Mahabandh, Mahavedha, Uddiyan Bandh, Jalandhar Bandh, Moola bandh, Viparitkarni Mudra

Meditation: Sthula, Jyoti & Sukshma Meditation

Viva: Ishwar Stuti Prarthnopasana

Text Book: -

1) Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
2) Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
3) Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

1) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
2) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
3) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.
4) Sahay G.S., (2023), Hatha Pradipika of Swatmaram. Chaukhamba publication

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

प्रथमपत्रम् - महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयतृतीयचतुर्थपादाः)

MVSAMJ-201 Credit-4

उद्देश्य-

- अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के द्वितीय पद के अन्तर्गत विद्यमान- अतिदेश प्रकरण, स्वर प्रकरण, आशिष्य प्रकरण तथा एक शेष वृत्ति पर विस्तृत विवेचन।
- इत् संज्ञा तथा आत्मनेपद परस्मैपद, नदी, घि, कारक, निपात, उपसर्ग, गति, कर्मप्रवचनीय इत्यादि सूक्ष्म विषयों के अध्यापन के द्वारा मनस्वी, एकाग्र एवं कुशाग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम-

- 'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' आदि सूत्रों के अध्ययन से कित् ङित् का अतिदेश तथा इसके प्रतिषेध का ज्ञान सम्यक् रूप से कर लेते हैं तथा प्रयोग स्थलों में गुणवृद्धी निषेधादि कार्यों को विद्यार्थी सरलता से कर लेते हैं।
- 'कष्टं व्याकरणम्' व्याकरण का अध्ययन कठिन कार्य है अतः इसके अध्ययन से एक पुरुषार्थी कर्मयोगी व्यक्तित्व तैयार हो जाता है।
- उपसर्ग व निपातादि संज्ञाओं को जाने लेने से विद्यार्थी संस्कृत वाङ्मय का गहनता से अध्ययन करके समाज में इन ग्रन्थों की शिक्षाओं का प्रचार कर सामाजिक जीवन के स्तर को उन्नत बनाता है।

व्याकरणमहाभायम् (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः)

इकाई-1 (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः)

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन् ङित् (1.2.1) - ग्राम्यपशुसङ्घेष्व.....(1.2.73)

इकाई-2 (प्रथमाध्यायस्य तृतीयपादः)

भूवादयो धातवः (1.3.1) - व्यक्तवाचां समुच्चारण (1.3.48)

इकाई-3 (प्रथमाध्यायस्य तृतीयपादः)

अवाद्ग्रः (1.3.51) - लुटि च क्लृपः (1.3.93)

इकाई-4 (प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपादः)

आ कडारादेका संज्ञा (1.4.1) - बहुषु बहुवचनम् (1.4.21)

इकाई-5 (प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपादः)

कारके (1.4.23) - परः संनिकर्षः संहिता (1.4.108)

सहायकग्रन्थाः-

- **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
  प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
- **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
  प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
- **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
  प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)

MVSAMJ-202 Credit-4

उद्देश्य-

- पद सम्बन्धि विधि, अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीही और द्वन्द्व समासों पर विवेचन एवं समास में पूर्व पर प्रयोग विषयक विचार।

परिणाम-

- समर्थः पदविधिः सूत्र के अध्ययन से ऐक्य पद्य, ऐक्य स्वरता का ज्ञान के साथ समस्तपद व विग्रहवाक्यों का सुचारू रूप से बोधन में समर्थ हो जाता है।
- विविध समासों के स्वरूपों को जानने से संस्कृत वाङ्मय में स्थित जटिल वाक्यों के अर्थों को भी समझकर तद्विषयक भ्रान्तियों का निवारण एवं नवीन समास सम्बन्धित शब्द समूह की संरचना करने में समर्थ हो जाते हैं।
- इस प्रकारण के अध्ययन से उपसर्जन व अनुपसर्जन शब्दों की पहचान के साथ उनका पूर्व प्रयोग व पर प्रयोग करता हुआ दोष रहित समस्त पदों की संरचना करता है।

महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

इकाई-1 (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1)

समर्थः पदविधिः (2.1.1)

इकाई-2 (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-2)

सुबामन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे (2.1.2)- पूर्वकालैकसर्वजरत्....(2.1.48)

इकाई-3 (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-3)

तद्धितार्थोत्तरपद.... (2.1.50)- मयूरव्यंसकादयश्च (2.1.71)

इकाई-4 (द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1)

अर्धं नपुंसकम् (2.2.2)- शेषो बहुव्रीहिः (2.2.23)

इकाई-5 (द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-2)

अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24) - कडाराः कर्मधारये (2.2.38)

सहायकग्रन्थाः-

- **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
  प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
- **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
  प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
- **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
  प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

तृतीयपत्रम्- महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

MVSAMJ-203 Credit-4

उद्देश्य-

- कारक विभक्ति एवं उपपदविभक्ति सम्बन्धि सूत्रों पर महर्षि पतंजलिकृत भाष्य का बोध ।
- समास में एकवद् भाव एवं लिङ्ग विषयक विधान पर महाभाष्य का ज्ञान प्रदान करना।
- अन्वादेश एवं आर्धधातुक विषयक धात्वादेशो का बोध ।
- तद्राजसंज्ञक प्रत्ययों, धातुओं एवं अव्ययों से विहित प्रत्ययो का लुक् विषयक विचार।

परिणाम-

- इस प्रकरण के अध्ययन से विद्यार्थी विभिन्न कारकों से सम्यक् विभक्ति संयोजन करने में समर्थ हो जाता है।
- इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी काव्य, महाकाव्य तथा नाटकादि के वाक्यस्वरूप को आसानी से हृदयाङ्गम करके प्रबोधन में समर्थ हो जाता है।
- द्विगु तथा द्वन्द्व आदि समास के लिङ्ग विषयक का ज्ञान करके शब्दों का यथार्थ बोधन कराता है।

महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

इकाई-1 (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक-1)
अनभिहिते (2.3.1)- मन्यकर्मण्यनादरे.....(2.3.17)

इकाई-2 (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक-2)
कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18)- नक्षत्रे च लुपि (2.3.45)

इकाई-3 (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक-3)
प्रातिपदिकार्थलिङ्ग... (2.3.46)- कृत्यानां कर्तरि वा (2.3.71)

इकाई-4 (द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-1)
द्विगुरेकवचनम् (2.4.1)- ण्यक्षत्रियार्षञितो.... (2.4.58)

इकाई-5 (द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-2)
तद्राजस्य बहुषु..... (2.4.62)- लुटः प्रथमस्य डारौरसः(2.4.85)

सहायकग्रन्थाः-

- **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
  प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
- **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
  प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
- **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
  प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

पञ्चोपदेशस्मरणम्

MVSAMJ-204 Credit-4

उद्देश्य :

- अष्टाध्यायी के मूलसूत्रों का कण्ठस्थीकरण करना।
- धातुपाठ में निर्दिष्ट अदादिगण से लेकर कण्ड्वादिगण पर्यन्त सम्पूर्ण धातुओं का कण्ठस्थीकरण करना।
- उणादिकोषसूत्रपाठ का कण्ठस्थीकरण करना।
- लिङ्गानुशासनसूत्रपाठ का कण्ठस्थीकरण करना।
- मूलपरिभाषाओं का कण्ठस्थीकरण करना।

परिणामः

- मूल सूत्र कण्ठस्थीकरण से अध्येता अष्टाध्यायी के वृतिग्रन्थों के अध्ययन में कुशल हो जाता है।
- मूल धातुकण्ठस्थीकरण से अध्येता धातुवृत्ति ग्रन्थों के अध्ययन में सक्षम हो जाता है।
- धातुपाठ स्मरण से छात्र धातुपाठ में निर्दिष्ट गण, आत्मनेपद, परस्मैपद, उभयपद, सेट्, अनिट्, आदि विषयों से अवगत हो जाता है।
- मूल उणादिकोष कण्ठस्थीकरण से अध्येता उणादिकोषवृत्ति ग्रन्थों के अध्ययन में सक्षम हो जाता है।
- मूल लिङ्गानुशासन ग्रन्थ के कण्ठस्थीकरण से अध्येता लिङ्गानुशासनवृत्ति ग्रन्थों के अध्ययन में सक्षम हो जाता है।
- परिभाषाओं के कण्ठस्थीकरण से अध्येता परिभाषाओं के वृतिग्रन्थों के अध्ययन में कुशल हो जाता है।

पञ्चोपदेशस्मरणम्

- **इकाई-1** अष्टाध्यायी (1-8 अध्यायपर्यन्त) **क्रेडिट-1**
- **इकाई-2** धातुपाठ सम्पूर्ण **क्रेडिट-1**
- **इकाई-3** उणादिकोषसूत्रपाठ सम्पूर्ण **क्रेडिट-1**
- **इकाई-4** परिभाषापाठ व लिङ्गानुशाससम्पूर्ण **क्रेडिट-1**

पाठ्यपुस्तकम्-

- अष्टाध्यायी, प्रकाशक : - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ।
- धातुपाठ सम्पूर्ण, प्रकाशक : - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ।
- उणादिकोषसूत्रपाठ, प्रकाशक : - सत्यानंद वेदवागीश
- परिभाषापाठः प्रकाशक : - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ।
- लिङ्गानुशासन, प्रकाशक : - हरयाणा, गुरुकुल झज्झर

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्) गद्यकाव्यञ्च

MVSAMN-205 Credit-4

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- भर्तृहरि विरचित 'वाक्यपदीयम्' के ब्रह्मकाण्ड में निहित व्याकरण शास्त्र के दार्शनिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- काव्य के अध्ययन से भाषाविषयक सामर्थ्य का विकास करना।

परिणाम :

- व्याकरणशास्त्र के छिपे हुये दार्शनिक सिद्धातों से अवगत होकर समाज में संस्कृत, दर्शन एवं वेदों के प्रति जागरूकता फैलाता है।
- भाषाविषयक सामर्थ्य के विकास से भाषा में और अधिक निपुण हो जाता है।

इकाई 1 - वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम् (आदितः पञ्चाशत्श्लोकाः) **क्रेडिट-1**

''शब्दतत्व निर्देशः'' इत्यतः ''शब्दार्थस्वरूपे ज्ञानरूपदृष्टान्तः पर्यन्तम्

इकाई २- वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम् (एकपञ्चाशत्तः - शतं श्लोकाः) **क्रेडिट-1**

''शब्दे भागवृत्तिताण्डभाव इव'' इत्यतः ''प्रतिबिम्बं न पदार्थान्तरम्'' पर्यन्तम्

इकाई ३- वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम् (एकशततः - समाप्तिपर्यन्तम्) **क्रेडिट-1**

''शब्दवाक्यानां कालभेदो नादभेदात्'' इत्यतः ''स्मृतिनामं वेदमूलकत्वं'' पर्यन्तम्

इकाई 4- विश्रुतचरितम् (दशकुमारचरितम् - अष्टमोच्छ्वासः) **क्रेडिट-1**

पाठ्यपुस्तकम्-

१. **वाक्यपदीयम्** - सम्पादकः - डॉ. शिवशंकर अवस्थी।
प्रकाशकः - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

२. **वाक्यपदीयम्** - आ० पं. सत्यनारायण खण्डूड़ी
चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी-

३. **विश्रुतचरितम्** (दशकुमारचरितम् - अष्टमोच्छ्वासः)
प्रकाशकः - मोतीलाल बनारसी

४. **विश्रुतचरितम्** - डॉ शशिशेखर चतुर्वेदी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदान्तदर्शनम् (चयनितप्रसङ्गाः)

MVSAMD-206 Credit-2

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- वेदान्त दर्शन के फलाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के सन्दर्भों को कण्ठस्थ कराना।

परिणाम-

- वेदान्त दर्शन के फलाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
- वेदान्त दर्शन व मीमांसा दर्शन के प्रमुख सन्दर्भों का विवरण।

इकाई 1- वेदान्त दर्शन- चतुर्थ अध्याय - प्रथमपाद

जीवनपर्यन्त एकाग्रतादि साधन के द्वारा परमात्मा का ध्यान, प्रतीक उपासना का निषेध, उपासना से परमात्मा का साक्षात्कार होने पर पापों का असंस्पर्श तथा पुण्यकर्मों का फल।

इकाई 2- वेदान्त दर्शन - चतुर्थ अध्याय - द्वितीयपाद

मरण काल में सर्वेन्द्रिय-शक्तियों का सूक्ष्म शरीर में लीन होना, स्थूलशरीर का नाश हाने पर भी सूक्ष्म शरीर का नाश न होना।

इकाई 3- वेदान्त दर्शन - चतुर्थ अध्याय - तृतीयपाद

ब्रह्मेपासक योगी का सहस्त्रार चक्र के माध्यम से उत्क्रान्ति तथा ब्रह्मलोक गमन, देवयान मार्ग से ब्रह्मलोक गमन मुक्ति में सूक्ष्म शरीर का वर्तमानत्व व स्वप्नवत व्यवहार।

इकाई 4-वेदान्त दर्शन - चतुर्थ अध्याय-चतुर्थपाद

मुक्त का निजचैतन्य रूप में अवस्थान तथा जगत व्यापारवर्जित शांकल्कि ऐश्वर्य का उद्भव, ब्रह्म के साथ आनन्द आदि का साम्य।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

वेदान्त दर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

सहायक ग्रन्थ-

वेदान्त दर्शन- वैदिकमुनिभाष्य, (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), ब्रह्ममुनिभाष्य, शांकर भाष्य।

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होरात्रयम्

Research and Publication Ethics

MDPHRE-207 Credit-2

Objectives :-

1. To aware about concept of ethics in research and publication
2. To impart knowledge on ethics in research philosophy and publication

Outcomes :-

1. Research quality will be original and authentic.
2. Researchers will be able to inculcate some scientific values in her/his research work.

Unit-I (15 Hours)

1. Meaning of Research Ethics and moral values.
2. Free will and field/area of researchers
3. Copyright : Various aspects of legal rights in printing and digital writings.
4. Plagiarism : Parameters and norms for using related research as references.

Unit-II (15 Hours)

1. Publication Ethics : Authorship, plagiarism checking, data and facts related future impacts in society.

Reference Book-Research and Publication Ethics , Writer- Dr. Upedra Pratap Singh, Ms.Sakshi Ahlawat, Dr. Sushma Sharma Publishers-Sultan Chand sons New Delhi

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् - VIII

MVSAVA-208

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas

Sukshma Yogic vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar

Asan

Sidhdasana, Padmasana, Bhadrasana, Muktasana,Vajrasana,Swastikasana, Simhasana, Gomukhasana, Veerasana, Dhanurasana, Mritasana, Guptasana, Matsyasana, Matsyendrasana, Gorakshasana, Paschimottanasana, Utakasana, Sankatasana, Mayurasana, Kukkuttasana, Kurmasana, Uttanakurmasana, Mandukasana, Uttana mandukasana Vrikshasana, Garudasana, Shalbhasana, Makarasana, Ushtrasana, Bhujangasana, Yogasana

Advance yogasan:

Padma Sarvangasana, Ekpaadskandha Asana, Tolangulasana, Vatayanasana, Tittibhasana, Garbhasana, Shirsha Padangushthasan, Guptasana,Vibhakta Paschimottanasan, Padmabakasan, Ek Paad Rajakapotasan, Purna Ustrasana

Pranayama:

Sahit Pranaym, Suryabhed, Ujjayi, Sheetali, Bhastrika & Bhramari Pranayam, Bahya Aabhyantar Vritti, Stambha Vritti and all practices of previous semester.

Shatkarma:

Sutraneti, Agnisara, Sheetkram and Vyutkram (Inverse) Kapalbhati and all the practices of previous semester.

Mudra and Bandha

Nabho Mudra, Yoni Mudra, Tadagi Mudra, Shambhavi Mudra, Ashwini Mudra, Pashini Mudra, Kaki Mudra & all practices of previous semester.

Mantra & Meditation:

Devyajna Mantras- Meaning, Memorization & Recitation

Text Book: -

1) Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
2) Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
3) Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

1) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
2) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
3) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.
4) Saraswati N., (), Gherand Samhita. Yoga Publication Trust, Bihar

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

प्रथमपत्रम् - महाभाष्यम् (तृतीयाध्यायः)

MVSAMJ-301 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- सनन्त, नामधातु, यङन्त, णिजन्त एवं आयान्तादि धातुओं का बोध ।
- आख्यात में प्रयुक्त होने वाले विकरण प्रत्यय तथा धातु से प्रयुक्त कृत् एवं कृत्य प्रत्ययों का बोध ।
- कर्म एवं सुबन्त उपपद रहते धातुओं से प्रत्यय विधान तथा भूत एवं वर्तमान काल में निर्दिष्ट प्रत्ययों का बोध ।
- उणादि तथा कर्ताभिन्नकारक में संज्ञा में और भाव में विहित प्रत्ययों एवं साथ ही खलर्थ प्रत्ययों का बोध ।
- कालातिदेश में विहित प्रत्यय लिङ्, लोट् एवं तुमुन् आदि प्रत्ययों का बोध ।
- क्त्वा और णमुल् प्रत्यय विषयक बोध तथा अनेक विषयों के विधि सूत्रों का बोध ।

परिणाम-

- इस प्रकरण में विद्यार्थी सनन्त, यङन्तादि धातुओं के बारे में सूक्ष्मता से अध्ययन करके तत् तत् विषय में निःशंक होकर वाक्यों में इन प्रत्ययान्तो प्रयोग करता है।
- इसमें धातुओं से होने वाले सभी प्रमुख प्रत्ययों का विस्तृत विवेचन होने से विद्यार्थी सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय को सरलता से समझकर उसका समाज में उपदेश करके समाज को निर्भ्रान्त बनाता है।
- 'उणादयो बहुलम्' इस सूत्र का अध्ययन करके विद्यार्थी औणादिक शब्दों की निष्पत्ति आसानी से करने में समर्थ हो जाता है।
- इन सभी प्रकरणों के अध्ययन के पश्चात् कर्ता, कर्म, करण आदि साधनों को जानकर वाक्यों में प्रयोग करता है।

व्याकरणमहाभाष्यम्

इकाई-1 (तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1, 2, 3) **क्रेडिट-1**

प्रत्ययः (3.1.1)- कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि (3.1.40)

इकाई-2 (तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-4, 5, 6) **क्रेडिट-1**

च्लि लुङि (3.1.43)- प्रसृल्वः समभिहार वुन् (3.1.149)

इकाई-3 (तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1, 2, 3) **क्रेडिट-1**

कर्मण्यण् (3.2.1)- मतिबुद्धिपूजार्थे.... (3.2.188)

इकाई-4 (तृतीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ) **क्रेडिट-1**

उणादयो बहुलम् (3.3.1)- आर्धधातुकं शेषः (3.4.114)

सहायकग्रन्थाः-

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्

प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य

प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री

प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- महाभाष्यम् (चतुर्थाध्यायः)

MVSAMJ-302 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- स्वादि एवं तद्धित प्रत्ययों की प्रकृति तथा स्त्रीप्रत्ययों का बोध ।
- तद्धित के अधिकार में अपत्यार्थ, चातुरर्थिक, शैषिकार्थिक तथा अन्य प्रत्ययों का बोध।

परिणाम-

- इसके अध्ययन से छात्र स्वादि एवं तद्धित प्रत्ययों के साथ ही स्त्रीलिङ्ग प्रत्ययों का प्रयोग कर पाता है।
- तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों को पहचान लेता है।
- अपत्यार्थ आदि अर्थों के बोध से तदर्थक शब्दों का निर्माण करके संस्कृत सम्भाषण के सौष्ठव में वृद्धि करता है।

व्याकरणमहाभाष्यम्

इकाई-1 (चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1, 2) **क्रेडिट-1**

ङ्याप्प्रातिपदिकात् (4.1.1)- गोत्रावयवाद् (4.1.76)

इकाई-2 (चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-3, 4) **क्रेडिट-1**

समर्थानां प्रथमाद् वा (4.1.82)- अतश्च (4.1.177)

इकाई-3 (चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1, 2) **क्रेडिट-1**

तेन रक्तं रागात् (4.2.1)- वृद्धादकेकान्तखोपधात् (4.2.141)

इकाई-4 (चतुर्थाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ) **क्रेडिट-1**

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां.....(4.3.1)- वसोः समूहे च (4.4.140)

सहायकग्रन्थाः-

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७
२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य
प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम्- महाभाष्यम् (पञ्चमाध्यायः)

MVSAMJ-303 Credit-4

उद्देश्य-

- तद्धित के अधिकार में विहित आर्हीयार्थिक तथा भाव एवं कर्म में विहित त्वतल् आदि प्रत्ययों का बोध।
- संख्या वाचियों से पूरण अर्थ में विहित, प्रतिपदिकों से मतुप् अर्थों में विहित तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध ।
- विभक्तिसंज्ञक, आतिशायिक, स्वार्थिक, समासान्त तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध ।

परिणाम-

- छात्र संस्कृत भाषा में प्रचलित अनेक प्रकार के तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों को जानकर वाक्यों में प्रयोग करता है।
- संस्कृत भाषा के लेखन, सम्भाषण और अध्ययन में निष्णात होकर लघुशोधन लेखन आदि में प्रवृत्त होता है।

व्याकरणमहाभाष्यम्

इकाई-1 (पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1) **क्रेडिट-1**

प्राक् क्रीताच्छः (5.1.1)- संख्यायाः संज्ञासङ्घ.....(5.1.58)

इकाई-2 (पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-2) **क्रेडिट-1**

पंक्तिविंशतित्रिं.....(5.1.59)- हायनान्तयुवादि... (5.1.130)

इकाई-3 (पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1, 2) **क्रेडिट-1**

विभाषा तिलमाषो.... (5.2.4)- पुष्करादिभ्यो देशे (5.2.135)

इकाई-5 (पञ्चमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ) (आह्निक-3.2, 4.1) **क्रेडिट-1**

प्राग् दिशाविभक्तेः (5.3.1)- ईयसश्च (5.4.156)

सहायकग्रन्थाः-

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्

प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य

प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री

प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थपत्रम्- धातुवृत्तिः (भ्वादिर्गणः)

MVSAMJ-304 Credit-4

उद्देश्य-

- आचार्य सायण विरचित धातुवृत्ति ग्रन्थ के माध्यम से भ्वादिगण में स्थित धातुओं का विविध प्रक्रियाओं में बोध प्रदान करना।

परिणाम-

- इसके अध्ययन से संस्कृत भाषा में प्रचलित सम्पूर्ण तिङन्त पदों का ज्ञान हेाता है।
- धातुवृत्ति के अध्ययन से सम्पूर्ण तिङन्त पदों की सिद्धि को सीखकर संस्कृत संभाषण में अति-उत्कृष्ट धातुरूपों का प्रयोग करता है।

धातुवृत्ति (भ्वादिगणः)-

इकाई-1 **क्रेडिट-1**

भू, सत्तायाम् (1.1)- एजृ कम्पने (1.143)

इकाई-2 **क्रेडिट-1**

टुस्फूर्जा, वज्रनिर्घोषे- (1.144)- पन, च (1.299)

इकाई-३ **क्रेडिट-1**

भाम, क्रोधे- (1.300)- तूष, तुष्टौ (1.452)

इकाई-४ **क्रेडिट-1**

पूष, वृद्धौ- (1.453)- टुओश्वि, गतवृद्ध्योः..... (1.736)

सहायकग्रन्थाः-

१- माधवीय धातुवृत्तिः - सम्पादकः- विजयपालो विद्यावारिधिः।
प्रकाशकः- १- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

परिभाषेन्दुशेखरः चम्पूकाव्यञ्च

MVSAMN-305 Credit-4

उद्देश्य

- परिभाषेन्दुशेखर के माध्यम से व्याकरण महाभाष्य में प्रयुक्त परिभाषाओं से अवगत कराना।
- काव्य ज्ञान व भाषा के सामर्थ्य का विकास कराना।

परिणाम -

- महाभाष्य में प्रयुक्त होने वाली परिभाषाओं के विस्तृत ज्ञान से व्याकरण शास्त्र का निर्भ्रान्त ज्ञाता हो जाता है।
- संस्कृतभाषा में और अधिक निपुणता को प्रप्त करता है।

इकाई १ - परिभाषेन्दुशेखरः **क्रेडिट-1**

शास्त्रत्वसम्पादनोद्देशं नाम प्रथमं प्रकरणम्

इकाई २ - परिभाषेन्दुशेखरः **क्रेडिट-1**

बाधबीजं नाम द्वितीयं प्रकरणम्, शास्त्रशेषं नाम तृतीयं प्रकरणम्

इकाई ३ - चम्पूकाव्यम् **क्रेडिट-1**

नलचम्पू (प्रथमोच्छ्वासः 1-25)

इकाई ४ - चम्पूकाव्यम् **क्रेडिट-1**

नलचम्पू (प्रथमोच्छ्वासः 26-50)

पाठ्यपुस्तकम्-

1. **परिभाषेन्दुशेखर** - आचार्य विश्वनाथ मिश्र
   चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
2. **नलचम्पू** - प० परमेश्वरदीन पाण्डेय
   चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

सस्वरवेदपाठः

MVSAMD-306(1) Credit-2

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों आदि विषयों से सम्बन्धी ज्ञान से युक्त होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के जटादि पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों (वर्णो) के उच्चारण का सम्यक् बोध कराना।

परिणाम-

- वेद पाठ के विभिन्न जटाघनादि प्रकारों (पाठों) का बोध हो जाता है।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त होता है।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक वृत्तियाँ पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय का एवं आनन्दमय कोष पुष्ट होते हैं एवं जीवन आन्नद से युक्त रहता है।

ईकाई-१ **क्रेडिट-1**

१. वैदिक वाङ्मय परिचय।
२. वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।
३. वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।
४. वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।
५. मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

ईकाई-२ **क्रेडिट-1**

१. ऋग्वेदीय अग्नि, वायु, वागाम्भृणी सूक्तों का कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
२. पुराने पाठ की आवृत्ति।

ईकाई-३ **क्रेडिट-1**

१. पुरुष, नासदीय, बृहस्पति सूक्तों का कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
२. पुराने पाठ की आवृत्ति।

ईकाई-४ **क्रेडिट-1**

१. कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।
२. पुराने पाठ की आवृत्ति।
३. मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थीकरण के साथ-साथ और अर्थ सहित व्याख्या।
४. स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।
५. संगठन सूक्त के मंत्रों का अर्थ बोध।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

भारतीयसंगीतबोधः

MVSAMD-306(2) Credit-2

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होरात्रयम्

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- पाठ्यक्रम छात्रों को विषय या कौशल के बारे में कौशल ज्ञान और प्रदान करता है.
- पाठ्यक्रम छात्रों को अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने और ज्ञान के प्रति विश्वास बनाने में मदद करता है.
- पाठ्यक्रम छात्रों को समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है.

परिणाम :

- पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन.
- शिक्षक सुनिश्चित करते हैं कि पाठ्यक्रम के लक्ष्य स्पष्ट हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रभावी तरीके से मूल्यांकन किया जा सकता है.
- छात्रों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण मे विकास, जो वे कोर्स को पूरा करने के बाद प्रदर्शित करे.

<u>सैद्धांतिक + क्रियात्मक</u>

<u>यूनिट - 1</u> भारतीय संगीत का इतिहास

- वैदिक काल
- मध्यकाल
- आधुनिक का

<u>यूनिट -2</u> सामवेद में सामगान

- प्रकारों का अध्ययन
- उदगाता, प्रस्तोता, प्रतिहर्ता
- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित

<u>यूनिट -3</u> भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र संक्षिप्त अध्ययन

- 28 से 33 अध्याय

<u>यूनिट - 4</u> शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर संक्षिप्त अध्ययन

- स्वराध्याय
- रागाध्याय
- प्रकीर्णाध्याय
- तालाध्याय
- वाद्याध्याय
- नर्तनाध्याय

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होरात्रयम्

भारतीयनृत्यबोधः (भरतनाट्यम्)

MVSAMD-306(3) Credit-2

Mode: Practical + Theory

Course Name- Introduction of Bharatanatyam

Objective:

- To introduce students to the foundational elements of Bharatanatyam through a balanced blend of practical and theoretical training. The course aims to:
- Develop proper body posture, movement control, and rhythm awareness.
- Teach basic adavus (steps), mudras (hand gestures), and short dance sequences.
- Cultivate understanding of key theoretical concepts such as abhinaya, mudras, tala (rhythm), and the historical and cultural background of Bharatanatyam.
- Familiarize students with classical dance terminology and significant contributors to the art form.
- Prepare students to confidently perform short Bharatanatyam items with grace and understanding.

Outcome:

- Focus on building strong basics.
- Teach body control, rhythm sense, hand gestures.
- Provide simple historical, technical, and theoretical knowledge.
- Prepare students for performing small items confidently.

1- PRACTICAL

- **Namaskaram**
- **Besic Posture**:
  - Samapadam (Straight posture)
  - Araimandi (Half-sitting position)
  - Murumandi (Full sitting position)
- **Adavu**
  - Tatta Adavu (3 speeds)
  - Natta Adavu (3 speeds)
  - Sarikkal Adavu (3 speeds)
  - Teermanam Adavu
  - Parval adavu
  - Tattimetti adavu
  - Kuditamitta Adavu
- **Hast Mudras:**
  - 05Asamyukta Hasta Viniyoga (Single hand gestures)
  - 10 Samyukta Hasta Viniyoga (Double hand gestures)
  - Dhyan Shloka, Shiro Bheda, Drishti Bheda, and Greeva Bheda According to Abhinaya Darpanam
- Short **Korvais** (small step sequences combining adavus).

THEORY CONTENT (Dance Knowledge)

- History and Evolution:
  - From temples to stage
  - Importance of Bharatanatyam in Indian culture
- Brief about famous figures (Smt. Rukmini Devi Arundale, and Smt.T. Balasaraswati)

Basic Dance Terminology

- Adavu: Definition and importance
- Mudra: Role in expression
- Abhinaya: Meaning and types (only basic 4 types)
- Natya, Nritya, Nritta: Definition

Hand Gestures (Hasta Mudras)

- Importance of Hasta Mudras in dance
- Introduction to Asamyukta and Samyukta Hastas.

Rhythm (Tala) Basics

Brief introduction of South Indian Taal System .
Simple Talas used in basic compositions (Rupak and Aadi Talam)
Concept of Laya (tempo: slow, medium, fast)

- Understanding the Dance Sequence (Margam)
- Preparation for short assignments

Bhartiya Natya parampara evam abhinayadarpana by Vachaspati gairola

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होरात्रयम्

भारतीयनृत्यबोधः (कथकः) [Introduction of Kathak]

MVSAMD-306(4) Credit-2

Learning Objective

1. Provide foundational knowledge of Kathak technique, history and aesthetics.
2. Develop basic body alignment, posture, hand movements and footwork.
3. Introduce the student to taal structure, layakari and Kathak repertoire.
4. Build confidence in stage performance, expression and classroom discipline.
5. Nurture sensitivity towards Indian cultural values and the guru–shishya learning tradition.

Learning Outcomes

1. Demonstrate basic tatkaar and bhramari with correct posture and rhythm.
2. Present elementary nritta sequences with understanding of taal and laya.
3. Identify Gharanas, repertoire parts and basic terminologies of Kathak.
4. Perform a short Vandana / Thumri / Gat-Bhava with introductory Abhinaya.
5. Integrate theoretical learning into practical performance and classroom discipline.

Course Structure

Unit	Content Focus
Unit 1 (Theory)	Introduction to Indian Classical Dance system; origin and development of Kathak; contribution of temple & court tradition to the evolution of Kathak.
Unit 2 (Theory)	Basic Kathak terminology – Nritta, Nritya, Natya, Taal, Laya, Matra, Theka; Introduction to Gharanas – Lucknow, Jaipur & Banaras (distinctive features); Repertoire components – Thaat, Aamad, Tatkaar, Tihai, Chakri, Gat.
Unit 3 (Practical)	Body conditioning, posture, torso & hand movement alignment; Eye & neck exercises; Basic Tatkaar (single, dugun, chaugun); Teentaal padhant and theka recitation; Thaat + Aamad + simple Toda–Tukda + Tihai.
Unit 4 (Practical)	Chakkars (slow and madhya laya), Vandana / Krishna / Shiva / Devi presentation OR basic Gat–Bhava; Stage discipline, padhant, salutation, basic costume and stage presence.

Assessment Pattern (As per NEP)

Component	Weightage
Theory (Written / Viva)	30%
Practical Internal	20%
Final Practical Performance	50%

Detailed Study Material (Reference Books)

Title	Author	Publisher	Place	Year
Kathak Darpan	Pt. Birju Maharaj	Arya Book Depot	New Delhi	1994
Natyashastra (Selected Chapters)	Bharat Muni	Munshiram Manoharlal Publishers	New Delhi	2018 (Reprint)
Kathak Nritya Ka Itihas	Dr. Puru Dadheech	Lokbharti Prakashan	Allahabad	2001
Nritya Sarvasva	Pt. Rohini Bhate	Sharada Prakashan	Pune	1998
Abhinaya Darpan	Nandikeshwar	Khemraj Shrikrishnadas Publishing	Mumbai	2010 (Reprint)
Indian Classical Dance: Tradition in Transition	Kapila Vatsyayan	Abhinav Publications	New Delhi	1977

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होरात्रयम्

Research Methodology
MDPHRE-307 Credit-2

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः-

- विद्यार्थियों को शोध की विषयवस्तु, प्रक्रिया एवं पद्धति के बारे में अवगत कराना।
- शोध के महत्व एवं लाभ के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध कराना।
- दार्शनिक, सामाजिक एवं नैतिक क्षेत्र में शोध के लिए प्रेरित करना।

परिणामः-

- शोध की प्रक्रिया, शोध की पद्धति एवं विषयवस्तु के बारे में आनुभविक ज्ञान प्राप्त होगा।
- शोध के विभिन्न प्रकार के लाभ एवं महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर उसे व्यवहारिक रूप में अपनाने में सहायता प्राप्त होगी।
- विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण विषयों पर शोध करने का अवसर प्राप्त होगा जिससे वे उपयोगी एवं प्रांसगिक विषयों पर लघु शोध लिख सकेगें।

इकाई १ शोध का अर्थ, परिभाषा एवं परिचय (20 घण्टें)

- अनुसंधान का स्वरूप, शोध का तात्पर्य एवं परिभाषा, शोध के प्रकार- शुद्ध शोध, व्यवहारपरक शोध।
- शोध के उद्देश्य, व्यवहारपरक शोध या मनोवैज्ञानिक शोध का क्षेत्र
- वैज्ञानिक ज्ञान और वैज्ञानिक विधि, वैज्ञानिक ज्ञान का स्वरूप या विशेषतायें
- साधारण ज्ञान तथा वैज्ञानिक ज्ञान में अन्तरज्ञान-अर्जन की विधियाँ, तथ्य, परिकल्पना, सिद्धांत और नियम

इकाई २ शोध-प्रक्रिया, शोध प्रक्रिया में निहित अवस्थायँ (20 घण्टें)

- शोध समस्या, परिचय, साहित्य समीक्षा, परिकल्पना
- अध्ययन-विधि, पायलट अध्ययन, परीक्षण संचालन और प्रदत्त संग्रह
- परिणाम एवं विवेचन
- शोध में नैतिक समस्याएँ एवं सिद्धान्त

इकाई ३ शोध-अभिकल्प, प्रदत्त-संग्रह प्रविधिः साक्षात्कार, शोध में नैतिक समस्याएँ एव सिद्धान्त (20 घण्टें)

- शोध-अभिकल्प के सिद्धान्त
- प्रदत्त-संग्रह प्रविधिः साक्षात्कार
- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, शोध की रिपोर्ट तैयार करना

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् - IX

MVSAVA-308

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas as per previous semester

(Sukshma asana, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar)

Unit-1: Asanas

Yogamudrasan, Supta Padmasan, Mandukasan, Shashakasan, Janushirasan, Marichayasan, kurmasan, Merudandasan, Vrishabhasan, Konasan, Trikonasan, Ardha Parshvottanasan, Parshvottanasan, Uttan Padasan, Naukasan, Jatharasan, Viparit Naukasan, Shalabhasan & Previous semester asanas.

Unit-2: Advance Yogasanas

Purna Shalabhasan, Gand Bherundasan, Supta Dimbasan, Supta Trivikramasan, Kokilasan, Bakasan, pratyanchasan, Tandavasan, Pashasan, Vishwamitrasan, & Previous semester asanas

Unit-3: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Sutra Neti, Dand Dhauti, Vastra Dhauti, Nauli, Sheetkram Kapalbhati & previous semester practices

Unit-4: Pranayam & Mediatation

8 Pranayam as per the protocol of PYP & previous semester practices
Ashta Chakra Dhyan (Nabhi-Chakra Dhyan, Kanthakoop Dhyan, Hriday Dhyan, Ajna Chakra Dhyan, Gayatri Dhyan)

Text Book: -

1- Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
2- Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
3- Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

1- Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
2- Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
3- Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

प्रथमपत्रम् - महाभाष्यम् (षष्ठाध्यायः)

MVSAMJ-401 Credit-4

उद्देश्य :

- धातु को द्वित्व, सम्प्रसारण, आकारादेश एवं संहिता के अधिकार में विहित सन्धि एवं अन्य कार्यों का बोध ।
- उदात्त, स्वरित एवं अनुदात्त स्वर सम्बन्धि बोध ।
- उत्तरपद के रहते अलुग् तथा अन्य कार्यों का बोध ।
- अङ्ग के अधिकार में निर्दिष्ट दीर्घ, असिद्धवत् आर्धधातुक विषयक तथा भसंज्ञा सम्बन्धि कार्यों का बोध

परिणाम-

- सन्धियों का विस्तृत प्रकरण यहाँ विद्यमान है। जिनके ज्ञान से शास्त्रों में प्रयुक्त सन्धि युक्त शब्दों को अतीव सरलता से समझने में समर्थ हो जाता है।
- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित स्वरों से सम्बद्ध एक विस्तृत प्रकरण का बोध प्राप्त कर वह स्वरों के विज्ञान को समझने में सक्षम हो जाता है।
- शब्द निर्माण प्रक्रिया में दीर्घ तथा अङ्गाधिकार कार्यों को करने में कुशल हो जाता है।
- भस्य अधिकार में, टिलोपादि, आदेश विधि तथा प्रकृतिभाव को जानने में समर्थ हो जाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम्

इकाई-1 (षष्ठाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1, 2, 3)

एकाचो द्वे प्रथमस्य (6.1.1)- भय्यप्रवय्ये चच्छन्दसि (6.1.83)

इकाई-2 (षष्ठाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक- 4, 5, 6)

एकः पूर्वपरयोः (6.1.84)- समासस्य (6.1.223)

इकाई-3 (षष्ठाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ)

बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् (6.2.1)- सम्प्रसारणस्य (6.3.139)

इकाई-4 (षष्ठाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-1, 2)

अङ्गस्य (6.4.1)- विभाषापः (6.4.57)

इकाई 5 (षष्ठाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-3, 4)

स्यसिच्सीयुट्तासिषु.... (6.4.62)- दाण्डिनायनहास्ति..... (6.4.174)

सहायकग्रन्थाः-

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७
२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य
प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- महाभाष्यम् (सप्तमाध्यायः)

MVSAMJ-402 Credit-4

उद्देश्य :

- तिङ् तथा सुप् प्रत्ययों को आदेश एवं आगमों के विधान का ज्ञान ।
- परस्मैपदपरक वृद्धि, आर्धधातुक प्रत्ययों को इट् निषेध, इट् विधि, तथा युष्मद् अस्मद् इत्यादि सर्वनाम शब्दों को विभक्ति के परे रहत कार्यों के विधान का बोध ।
- पूर्वोत्तरपद वृद्धि, धातु एवं विभक्ति सम्बन्धी विविध कार्यों का बोध ।
- धातु एवं अभ्यास सम्बन्धि विविध कार्यों का ज्ञान ।

परिणाम-

- सम्पूर्ण सप्तमाध्याय में विधि सूत्रों का संग्रह है अर्थात् शब्दों की सिद्धि में जो विधान होते हैं उनका ज्ञान यहाँ से विस्तृत रूप में प्राप्त हो जाता है और वह शब्दों के स्वरूप को समझाने में समर्थ हो जाता है।
- इस अध्याय में सुबादेश, नुमागम इडागम तथा वृद्धि आदि विधियों का विशिष्ट रूप से बोध कराने में समर्थ हो जाता है।
- गुणादेश तथा अभ्यास सम्बन्धित विशिष्ट कार्यों को प्रकृष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है।
- युष्मद् अस्मद् आदि सर्वनाम शब्दों के निर्माण में निपुण हो जाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम्

इकाई-1 (सप्तमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1,2)

युवोरनाकौ (7.1.1)- उदोष्ठ्यपूर्वस्य (7.1.102)

इकाई-2 (सप्तमाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1,2)

सिचि वृद्धिः.....(7.2.1)- ईडजनोर्ध्वे च (7.2.78)

इकाई-3 (सप्तमाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ) (आह्निक-2.2, 3.1)

अतो येयः (7.2.80)- भस्त्रैषाजाज्ञा.....(7.3.47)

इकाई-4 (सप्तमाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक- 2)

ठस्येकः (7.3.50)- आङो नास्त्रियाम् (7.3.120)

इकाई-5 (सप्तमाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक- 1)

णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः (7.4.1)- सन्वल्लघुनि चङ्परे....(7.4.96)

सहायकग्रन्थाः-

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्

प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य

प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री

प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

तृतीयपत्रम्- महाभाष्यम् (अष्टमाध्यायः)

MVSAMJ-403 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- पदसम्बन्धि द्वित्व पद से उत्तर युष्मद् अस्मद् को आदेश एवं स्वरविषयक बोध ।
- पूर्वत्रा सिद्ध प्रकरण के अन्तर्गत निष्ठा, प्लुत उदात्त एवं संहिता विषयक मूर्धन्य, णत्व इत्यादि विविध कार्यों का बोध ।

परिणाम-

- द्वित्व आदि प्रक्रिया एवं स्वर सम्बन्धि ज्ञान प्राप्त कर वेदमन्त्रों में प्रयुक्त स्वर व्यवस्था को समझाने में समर्थ हो जाता है।
- 'पूर्वत्रासिद्धम्' जैसे विशिष्ट प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्तकर शब्दों की सिद्धि करने में अधिक निपुण हो जाता है।
- संयोगान्तादि लोप विधियों का निष्ठा प्रत्यय सम्बन्धित नत्वादिविधि तथा लुप्तविधि का ज्ञान प्राप्तकर शब्दों की सिद्धि में समर्थ हो जाता है।
- णत्व, श्चुत्व, ष्टुत्व तथा बहुप्रयुक्त सन्धियों का विश्लेषण कर पाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम्

इकाई-1 (अष्टमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1, 2)

सर्वस्य द्वे (8.1.1)- सामान्यवचनं विभाषितं.....(8.1.80)

इकाई-2 (अष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1)

पूर्वत्रासिद्धम् (8.2.1)- झषस्तथोर्धोऽधः (8.2.40)

इकाई-3 (अष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1, 2)

रदाभ्यां निष्ठातो नः..... (8.2.42)- तयोर्य्वावचि.....(8.2.108)

इकाई-4 (अष्टमाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक-1, 2)

मतुवसो रु सम्बुद्धौ.....(8.3.1)- सदेः परस्य लिटि (8.3.118)

इकाई-5 (अष्टमाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-1, 2)

रषाभ्यां नो णः.....(8.4.1)- अ अ (8.4.68)

सहायकग्रन्थाः-

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्

प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य

प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री

प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

धातुवृत्तिः (अदादितः कण्ड्वादिगणपर्यन्तम्)

MVSAMJ-404 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- आचार्य सायण विरचित धातुवृत्ति ग्रन्थ के माध्यम से भ्वादिगण अतिरिक्त गणों में स्थित धातुओं का विविध प्रक्रियाओं में बोध प्रदान करना।

परिणाम-

- अदादिगण से आरम्भ करके कण्ड्वादिगण पर्यन्त धातुओं के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर उनका प्रयोग करने में तथा शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों को समझाने में पूर्णतः समर्थ हो जाता है।
- गणों की धातुओं के विभिन्न कार्यों को जानकर इष्टाथों की संगति करने में समर्थ हो जाता है।
- वैदिक वाङ्मय के शब्दों के अर्थों का विश्लेषण कर पाता है।

धातुवृत्तिः (अदादि-कण्ड्वादिगणाः)

इकाई-1 अदादिर्गणः

इकाई-2 जुहोत्यादिर्गणः दिवादिर्गणः

इकाई-३ स्वादिर्गणः, तुदादिर्गणः

इकाई-४ रुधादिर्गणः, तनादिर्गणः, क्र्यादिर्गणः

इकाई-५ चुरादिर्गणः, कण्ड्वादिर्गणः

सहायकग्रन्थाः—

१- माधवीय धातुवृत्तिः - सम्पादकः- विजयपालो विद्यावारिधिः।

प्रकाशकः— १- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

पाण्डुलिपिविज्ञानम्

MVSARE-405 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- विद्यार्थियोंको भारतीय ज्ञान परंपरा की आधारशिला 'पाण्डुलिपियों' के इतिहास और महत्व से जोड़कर उनकीलेखन सामग्रियों(जैसे ताड़पत्र, भोजपत्र) और लेखन उपA करणों का बोध कराना।
- पाण्डुलिपियों के क्षय के कारणों को समझाना और उनके संरक्षण की विधियों में प्रशिक्षित करना।प्राचीन लिपियों को पहचानने और पढ़ने की प्राथमिक क्षमता विकसित करना।

परिणाम:

- विद्यार्थी पाण्डुलिपि केस्वरूप को समझकर, प्राचीन ग्रन्थोंको पहचानने में समर्थ होंगे।
- जीर्ण-शीर्ण हुईपाण्डुलिपियों को वैज्ञानिक और पारंपरिक विधियों से संरक्षितकरने में सक्षम होंगे।
- विभिन्न लिपियों केज्ञानसे उनके पठनमें प्रवृत्तहोंगेतथासंग्रहालयोंमेंग्रन्थों के सूचीकरण (Cataloging) वनवनिर्माणमें सहयोगी बनेंगे।

पाठ्यक्रम विवरण:

इकाई – I पाण्डुलिपि विज्ञान का इतिहास एवं स्वरूप पाण्डुलिपि शब्द की व्युत्पत्ति, परिभाषा और महत्व। **(क्रेडिट** – 1)
भारतीय ज्ञान परंपरा में मौखिक से लिखितकीयात्राकाविस्तृतअध्ययन।, पाण्डुलिपि और अभिलेखमें अंतर। भारत के प्रमुख पाण्डुलिपि संग्रहालयों (जैसे- तंजौर, पुणे, मैसूरआदि) का परिचय।

इकाई – II लेखन सामग्री एवं उपकरण **(क्रेडिट** – 1)
आधार सामग्री: ताड़पत्र (श्रीताल एवं खड़ताल), भूर्जपत्र,वस्त्र एवं हस्तनिर्मित कागज।
लेखन उपकरण: लेखनी (Stylus) के प्रकार, मसी (Ink) निर्माण की प्राचीन विधियाँ (स्थायी एवं अस्थायी मसी)।
ग्रन्थ का भौतिक स्वरूप: पत्र-संख्यांकन, छिद्रण, बन्धन (Binding) और वेष्टन (बस्ता)।

इकाई – III पाण्डुलिपि संरक्षण प्रविधि **(क्रेडिट** – 1)
क्षय के कारण: जैविक कारक (कीड़े, दीमक, फंगस), भौतिक कारक (नमी, तापमान, अग्नि) एवं मानवीय भूलें।
निवारक संरक्षण (Preventive Conservation): पाण्डुलिपियों का रखरखाव, लाल वस्त्र (खरवा) का प्रयोग, सिट्रोनेला तेल एवं नीम का प्रयोग।
उपचारात्मक संरक्षण (Curative Conservation): सामान्य सफाई, मृदु रसायनों का प्रयोग, और क्षतिग्रस्त पत्रों की मरम्मत।

इकाई – IV पुरालिपि परिचय एवं सूचीकरण , मुख्य लिपियों का उद्भव और विकास। **(क्रेडिट** – 1)
प्रादेशिक लिपियाँ: प्राचीनदेवनागरी, नन्दीनागरी, शारदालिपि की पहचान (सामान्य अक्षराभ्यास)।
पुष्पिका (Colophon): पाण्डुलिपि के अंत में लिपिकार द्वारा दी गई जानकारी को पढ़ना और समझना।
सूचीकरण (Cataloging): पाण्डुलिपि का विवरण पत्र (Data Sheet) भरना।

सहायक-ग्रन्थ :

पाण्डुलिपि विज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र, प्रकाशक- राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
भारतीयप्राचीनलिपिमाला (The Palaeography of India) - रायबहादुरगौरीशंकरहीराचंदओझा, प्रकाशन- मुंशीराममनोहरलाल, दिल्ली।
Manuscriptology and Textual Criticism – K.T. Pandurangi, Publisher- Dvaita Vedanta Studies and Research Foundation, Bangalore. Conservation of Manuscripts – O.P. Agrawal, Publisher- INTACH, New Delhi.

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Project/Dissertation
MVSARE-406 Credit-4

Objectives

- To aware the students about importance of research and to develope various perception and ideas on the relative subject.
- To the students about research and its process to get qulatative research work.
- To aware the students for learning different paramteras for doing research work.

Outcomes

- Students will apply the process and method while doing research.
- Students will be able to upgrade their knowledge thourg participating the saminars, workshops and conferences.

Unit-I (30 घण्टें)

- Introduction to Project and Dessartation.
- Introduction to Research Journals

Unit-II (30 घण्टें)

- Research Papers (Three research papers are compulsory in Peer Revised journals)
- Seminars (Three Paper presentation are compulsory in Seminars/Confrences)

Reference Book

- Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् - X

MVSAVA-407

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Unit-1: Basic Preparatory Asanas

Sukshma Yogic vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar

Unit-2: Asanas

Dvipada Skandhasana, Purna Bhujangasana, Purna Matsyendrasana, Pakshee Aasan, Vrishchik Aasana, Padma Mayurasana, Purna Vrishchikasana, Padma Sheershasana, Karnapidasana, Purna Dhanurasana, Gorakshasana, Purna Chakrasana, Purna Shalabhasana, Ek Pada Bakasana, Omkar Aasana, Purna Natarajasana
And all the practices of previous semesters.

Unit-3: Advance Yogasanas

Ashtanga & Vinyasa series, Aerial Yoga, Yoga with other props

Unit-4: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Danddhauti,Vastrdhauti, Nauli, Tratak

Unit-5: Pranayam & Mudra

8 Pranayam as per the protocol of PYP & previous semester practices

Hasta Mudra: Apan Mudra, Apan Vayu Mudra, Surya Mudra, Varun Mudra, Linga Mudra, Dharana Shakti Mudra

Meditation: - Pranav Meditation

Text Book: -

4) Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
5) Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
6) Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

5) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
6) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
7) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.